



बिहार गजट

असाधारण अंक

बिहार सरकार द्वारा प्रकाशित

16 माघ 1936 (श0)

(सं0 पटना 254) पटना, बृहस्पतिवार, 5 फरवरी 2015

जल संसाधन विभाग

अधिसूचना

29 जनवरी 2015

सं0 22/नि0सि0(पट0)—03—02/2005/297—श्री रामायण सिंह, तत्कालीन कार्यपालक अभियंता, गंगा सोन बाढ़ नियंत्रण प्रमंडल, दीघा, पटना द्वारा उक्त पदस्थापन अवधि में वर्ष 2005 बाढ़ के पूर्व कटाव निरोधक कार्यों से संबंधित आमंत्रित निविदाओं के निष्पादन में किये गये अनियमितता की जाँच विभागीय उड्डनदस्ता द्वारा की गयी। उड्डनदस्ता से प्राप्त जाँच प्रतिवेदन के समीक्षोपरान्त निम्नलिखित प्रथम द्रष्टया प्रमाणित आरोपों के लिए श्री सिंह के विरुद्ध विभागीय संकल्प ज्ञापांक 339 दिनांक 13.04.05 द्वारा सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण एवं अपील) नियमावली के नियम-55 के तहत विभागीय कार्यवाही प्रारंभ की गयी —

1. बाढ़ वर्ष 2005 पूर्व कराये जाने वाले कटाव निरोधक कार्यों से संबंधित एजेण्डा सं0 80/548 (बी0) के अन्तर्गत एक स्वीकृत प्राक्कलन के विरुद्ध बिना सक्षम पदाधिकारी की स्वीकृति प्राप्त किये कार्य को विभक्त कर चार गुणों में निविदा आमंत्रित करना एवं प्राप्त करना।

2. बाढ़ वर्ष 2005 पूर्व कराये जाने वाले कटाव निरोधक कार्यों के लिये दिनांक 10.02.2005 को प्राप्त आठ अदद कार्यों से संबंधित निविदा संचिकाओं, जो अंचल कार्यालय में दिनांक 25.02.05 को प्राप्त हुआ, को अपने पत्रांक 78 दिनांक 16.02.05 की तिथि में निर्गत कर बैंक डेटिंग करना।

3. बाढ़ वर्ष 2005 पूर्व कराये जाने वाले कटाव निरोधक कार्य से संबंधित आर0बी0 ग्रुप सं0-1 के निविदादाता में अंगली कन्सट्रक्शन के निविदा दस्तावेज को खोलते समय संलग्न अनुलग्नकों पर हस्ताक्षर/इनिशियल नहीं करना।

4. बाढ़ वर्ष 2005 पूर्व कराये जाने वाले कटाव निरोधक कार्य से संबंधित एल0बी0 ग्रुप सं0-4 के निविदादाता मे0 राय कन्सट्रक्शन के निविदा दस्तावेज पर अंकित निविदत कर एवं अन्य प्रविष्टियों में प्रयोग की गयी स्याही में अन्तर तथा तुलनात्मक विवरणी पर इनके दर एवं राशि की लिखावट अन्य लिखावट से मेल नहीं खाने के कारण निविदा दस्तावेज के साथ हेर-फेर करने का आरोप।

संचालन पदाधिकारी से प्राप्त जाँच प्रतिवेदन की समीक्षा विभागीय स्तर पर की गयी। समीक्षा में पाया गया कि संचालन पदाधिकारी द्वारा आरोपों को मात्र प्रक्रियात्मक भूल मानते हुए प्रतिवेदन समर्पित किया गया है। समीक्षोपरान्त जाँच प्रतिवेदन पर असहमति जताते हुए विषयांकित आरोपों को प्रक्रियात्मक भूल की संज्ञा नहीं मानी गई बल्कि प्रत्येक आरोप में श्री सिंह की मंशा स्पष्टतः संदेहात्मक प्रतीत पाया गया। साथ ही इनकी सत्य निष्ठा पर भी प्रश्नचिन्ह पाया गया। उक्त प्रमाणित आरोपों के लिए श्री सिंह से विभागीय पत्रांक 733 दिनांक 13.07.06 द्वारा द्वितीय कारण पृच्छा की गयी।

श्री सिंह से प्राप्त द्वितीय कारण पृच्छा के जवाब की समीक्षा में पाया गया कि श्री सिंह दिनांक 30.11.09 को सेवानिवृत्त हो चुके हैं। तत्पश्चात समीक्षोपरान्त विभागीय आदेश सं० 61 दिनांक 16.05.12 सह ज्ञापांक 507 दिनांक 16.05.12 द्वारा पूर्व में संचालित विभागीय कार्यवाही को बिहार पेंशन नियमावली के नियम 43 (बी०) में सम्परिवर्तित किया गया एवं विभागीय पत्रांक 596 दिनांक 11.06.12 द्वारा पुनः द्वितीय कारण पृच्छा की गयी। उक्त के क्रम में श्री सिंह द्वारा कतिपय अभिलेखों की मांग की गयी। विभागीय पत्रांक 953 दिनांक 04.09.12 द्वारा श्री सिंह को सूचित किया गया कि मांग की गई वांछित अभिलेख उनके द्वारा प्राधिकृत लेखा लिपिक को प्राप्त करा दिये गये हैं। कई स्मारों एवं दैनिक समाचार पत्रों में विज्ञप्ति के माध्यम से सूचना देने के बावजूद भी श्री सिंह द्वारा पुनः नियम-43 (बी०) के तहत पूछे गये द्वितीय कारण पृच्छा का जवाब समर्पित नहीं किया गया। ऐसी स्थिति में श्री सिंह के द्वारा पूर्व में प्राप्त कराये गये द्वितीय कारण पृच्छा के जवाब को ही सरकार के स्तर पर समीक्षा की गयी। समीक्षा में निम्न तथ्य पाये गये –

आरोप सं०-1 – प्रमाणित नहीं पाया गया।

आरोप सं०-2 – इस संदर्भ में श्री सिंह द्वारा द्वितीय कारण पृच्छा के जवाब में पत्र को गंतव्य कार्यालय में विलम्ब से उपलब्ध कराने का कारण कर्मचारियों को चुनाव कार्य में सलग्न रहना कहा गया है परन्तु इनके उक्त कथन को मान्य नहीं किया जा सकता है क्योंकि इनका कार्यालय एवं अंचल कार्यालय जहाँ पत्र प्राप्त कराना था एक ही शहर में रहते हुए दिनांक 16.02.05 को निर्गत पत्र को गंतव्य कार्यालय में दिनांक 25.02.05 को प्राप्त कराना इनके लापरवाही का द्योतक है। अतः उक्त आरोप प्रमाणित पाया गया।

आरोप सं०-3 – इस संदर्भ में श्री सिंह द्वारा द्वितीय कारण पृच्छा के जवाब में कहा गया कि एक संवेदक द्वारा परिस्थितिजन्य आधारित तनावपूर्ण वातावरण उत्पन्न करने के कारण निविदा पत्र के साथ संलग्न कुछ कागजातों पर भूलवश उनका इनिशियल छूट गया। समीक्षा में पाया गया कि श्री सिंह द्वारा अपनी भूल स्वीकार कर ली गयी है। वर्णित स्थिति में उक्त आरोप प्रमाणित पाया गया।

आरोप सं०-4 – इस संदर्भ में श्री सिंह द्वारा द्वितीय कारण पृच्छा के जवाब में मुख्य रूप से कहा गया कि प्रायः संवेदकों द्वारा निविदा कागजातों के प्रत्येक मद को, मात्र दर को छोड़कर पूर्व से ही तैयार कर लिया जाता है तथा अंतिम समय में प्रतिस्पर्धा की स्थिति में दरों का आकलन कर दर का प्रतिशत अंकित कर निविदा बॉक्स में डाला जाता है। ऐसी स्थिति में दो तरह के स्याही का प्रयोग किया जाना निविदाकार का निजी मामला है।

तुलनात्मक विवरणी में निविदित दर एवं राशि को मिटाकर अंकित करने के संदर्भ में श्री सिंह द्वारा कहा गया कि कार्यालय द्वारा की गयी भूल को उन्होंने अपनी देख-रेख में अन्य कर्मों से सुधार करवाया। फलतः लिखावट में भिन्नता पाया जाना स्वाभाविक है।

विभागीय समीक्षा में पाया गया कि श्री सिंह को निविदाकार के द्वारा व्यवहृत अन्य स्याही के रंग के बारे में अपनी अभ्युक्ति दर्ज की जानी चाहिये थी ताकि बाद में किसी भी व्यक्ति के मन में किसी भी प्रकार की आशंका उत्पन्न न हो। श्री सिंह द्वारा ऐसा न कर स्थिति को जटिल बना दिया गया किन्तु उनके द्वारा यह स्पष्ट किया गया है कि निविदा खोलने के समय उनके द्वारा पूर्ण पारदर्शिता बरती गई। अन्यथा इस कार्य से संबंधित अन्य निविदाकारों द्वारा परिवाद-पत्र विभाग में उपलब्ध कराया जाता। वर्णित स्थिति में उक्त आरोप अंशतः प्रमाणित पाया गया।

उपरोक्त वर्णित तथ्यों के आलोक में श्री रामायण सिंह, सेवानिवृत्त कार्यापालक अभियंता आरोप सं० (2) एवं (3) के लिए पूर्ण रूप से तथा आरोप सं० (4) के लिए आंशिक रूप से दोषी पाये गये। उक्त प्रमाणित आरोपों के लिए सरकार द्वारा श्री सिंह के विरुद्ध निम्न दण्ड देने का निर्णय लिया गया –

1. पेंशन से 10 (दस) प्रतिशत की राशि की कटौती पाँच वर्षों तक के लिए।

उक्त दण्ड प्रस्ताव पर माननीय विभागीय मंत्री एवं माननीय मुख्य मंत्री का अनुमोदन तथा बिहार लोक सेवा आयोग, पटना की सहमति प्राप्त है।

उपरोक्त वर्णित स्थिति में श्री रामायण सिंह, तत्कालीन कार्यापालक अभियंता, गंगा सोन बाढ़ नियंत्रण प्रमंडल, दीघा, पटना सम्प्रति सेवानिवृत्त को निम्न दण्ड दिया एवं संसूचित किया जाता है –

1. पेंशन से 10 (दस) प्रतिशत की राशि की कटौती पाँच वर्षों तक के लिए।

बिहार-राज्यपाल के आदेश से,
सतीश चन्द्र झा,
सरकार के अपर सचिव।

अधीक्षक, सचिवालय मुद्रणालय,

बिहार, पटना द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित।

बिहार गजट (असाधारण) 254-571+10-डी०टी०पी०।

Website: <http://egazette.bih.nic.in>